

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 7 अध्याय 6: प्रह्लाद का उपदेश

14 September 2026



पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



जब उनके गुरु दूर हैं, असुरों के पुत्र एक छोटे बालक के चारों ओर एकत्र होते हैं — खेलने नहीं, सुनने। और हिरण्यकशिपु का वह पुत्र, जिसे अग्नि या तलवार अब तक मार नहीं सकी, सबसे उच्च ज्ञान सिखाना आरम्भ करता है: अभी आरम्भ करो, बचपन में ही आरम्भ करो, और ईश्वर की शरण लो।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। पिछले अध्याय में बालक प्रह्लाद ने अपने प्राण लेने के हर प्रयास को सहा; अब, जब उनके गुरु दूर हैं, वह अपने सहपाठियों की ओर मुड़ता है और समस्त शास्त्रों में भक्ति पर सबसे स्पष्ट तथा कोमल शिक्षाओं में से एक देता है — एक बालक द्वारा बालकों को दिया गया उपदेश।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 7 (सप्तम स्कन्ध)
- अध्याय: 6
- अध्याय-शीर्षक: प्रह्लाद का अपने सहपाठियों को भक्ति-मार्ग का उपदेश
- मुख्य वक्ता: प्रह्लाद (देवर्षि नारद द्वारा सम्राट युधिष्ठिर को सुनाई गई कथा के भीतर)
- मुख्य श्रोता: दैत्यों के नन्हे पुत्र, प्रह्लाद के सहपाठी; तथा कथा-परिधि में, सम्राट युधिष्ठिर
- मुख्य स्थान: असुर-गुरुओं की पाठशाला, जब गुरु दूर थे
- मुख्य विषय-वस्तु: प्रह्लाद का यह उपदेश कि भक्ति बचपन में ही आरम्भ की जाए, कि सांसारिक जीवन एक बन्धन है, और मनुष्य को भगवान् नारायण की शरण लेनी तथा समस्त प्राणियों पर दयालु होना चाहिए
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 7, अध्याय 6, श्लोक 1–30
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

बचपन में ही आरम्भ करो

अपने साथियों द्वारा पूछे जाने पर महान बाल-भक्त प्रह्लाद मुस्कराया और उपदेश आरम्भ किया। उसके आरम्भिक वचन समस्त भागवत में सर्वाधिक उद्धृत वचनों में से हैं — आध्यात्मिक जीवन को तत्क्षण आरम्भ करने का आह्वान, जब तक कि मनुष्य-जन्म का दुर्लभ उपहार अभी नवीन है:

श्रीप्रह्लाद उवाच

कौमार आचरेत्प्राज्ञो धर्मान्भागवतानिह ।

दुर्लभं मानुषं जन्म तदप्यध्रुवमर्थदम् ॥ १ ॥

śrī-prahrāda uvāca kaumāra ācaret prājño dharmān bhāgavatān iha durlabham mānuṣaṁ janma tad apy adhravam arthadam

अर्थ: प्रह्लाद ने कहा: बुद्धिमान मनुष्य को अपने बचपन से ही भगवान् की भक्ति के नियमों का आचरण करना चाहिए; क्योंकि मनुष्य-जन्म — यद्यपि दुर्लभ तथा कठिनता से प्राप्य, और स्वयं अनित्य — वह एकमात्र जन्म है जो जीवन का सच्चा प्रयोजन प्रदान कर सकता है। (SB 7.6.1)

इस संसार में एकमात्र योग्य मार्ग, उसने उनसे कहा, भगवान् विष्णु के चरणों की शरण लेना है, जो समस्त प्राणियों के शासक, प्रियतम मित्र तथा साक्षात् आत्मा हैं।

भोग के पीछे भागने का खोखलापन

तत्पश्चात् प्रह्लाद ने कोमलता से किन्तु पूर्णतः, भोग की खोज में बीते समस्त जीवन-उद्यम को ढहा दिया। इन्द्रिय-सुख, उसने समझाया, देहधारियों को हर जन्म में स्वयमेव प्राप्त होता है, ठीक वैसे ही जैसे दुःख — भाग्य से, बिना किसी प्रयास के, केवल देह होने मात्र से।

सुखमैन्द्रियकं दैत्या देहयोगेन देहिनाम् ।

सर्वत्र लभ्यते दैवाद्यथा दुःखमयत्नतः ॥ ३ ॥

sukham aindriyakam daityā deha-yogena dehinām sarvatra labhyate daivād yathā duḥkham ayatnataḥ

अर्थ: हे दैत्यपुत्रो! जैसे देहधारियों को दुःख हर कहीं बिना प्रयास के, भाग्य से प्राप्त होता है, वैसे ही इन्द्रिय-सुख भी केवल देह होने मात्र से स्वयमेव प्राप्त हो जाता है। (SB 7.6.3)

अतः भोग के लिए प्रयत्न करना केवल जीवन को व्यर्थ करना है; और जो उस खोज में स्वयं को खपा देता है, वह भगवान् के चरण-कमलों तक, जो आनन्द का सच्चा स्रोत हैं, कभी नहीं पहुँचता। इससे अच्छा है कि देह के स्वस्थ रहते ही शाश्वत कल्याण के लिए प्रयत्न किया जाए। सौ वर्ष, उसने उन्हें स्मरण कराया, मनुष्य की पूर्ण आयु है — फिर भी आधा निद्रा में नष्ट होता है, बीस वर्ष बचपन तथा खेल में फिसल जाते हैं, बीस और वृद्धावस्था की असहायता में, और जो शेष रहता है वह परिवार तथा घर की चिन्ताओं में गँवा दिया जाता है।



प्रह्लाद चेतावनी देता है कि धन, घर तथा परिवार के स्नेह-पाशों से बँधी आत्मा अपने दुर्लभ मनुष्य-जीवन को व्यर्थ कर देती है, अपने ही कोश में रेशम-कीट के समान फँसी हुई

(SB 7.6.9-16)।

घर तथा परिवार का बन्धन

अविचल स्पष्टता से बालक ने बताया कि आसक्ति आत्मा को कैसे बाँधती है। कौन, उसने पूछा, जिसने अपनी इन्द्रियों को नहीं जीता, घर से चिपका तथा स्नेह के पाशों से बँधा हुआ स्वयं को मुक्त कर सकता है? कौन धन की तृष्णा त्याग सकता है, जो प्राणों से भी अधिक प्रिय है; प्रियजनों की मधुर संगति; बच्चों, परिजनों तथा सम्पत्ति का खिंचाव? रेशम-कीट के समान अपना ही कारागार बुनते हुए लाभ के पीछे भागता हुआ, असावधान मनुष्य न तो अपने जीवन के क्षीण होते जाने को देखता है, न अपने सच्चे प्रयोजन के नष्ट होने को, और उन्हीं वस्तुओं से कभी नहीं थकता जो उसे सताती हैं। ऐसी आत्मा, केवल “मेरा” तथा “पराया” देखती हुई, चाहे कितनी भी विद्वान हो, आत्म-साक्षात्कार नहीं कर सकती।

भगवान् नारायण की शरण लो

उन्हें जाल दिखाकर प्रह्लाद ने उन्हें बाहर निकलने का मार्ग भी दिखाया। सम्मानपूर्वक दूरी से, उसने परामर्श दिया, उनकी संगति से बचो जिनका मन इन्द्रिय-विषयों में लगा है, और इसके स्थान पर भगवान् नारायण की शरण लो, उस सबसे प्राचीन देव की, जो उनका भी परम लक्ष्य हैं जिन्होंने सब कुछ त्याग दिया है। उनकी सेवा, उसने कहा, किसी महान बाह्य प्रयास की माँग नहीं करती, क्योंकि वे समस्त प्राणियों की आत्मा हैं तथा सर्वत्र विद्यमान हैं।

नारायण की ओर मुड़ना इतना कम क्यों माँगता है, जबकि परिवार, धन तथा समाज से मुख मोड़ने में सम्पूर्ण जीवन व्यय हो सकता है और फिर भी हृदय असन्तुष्ट रह सकता है? प्रह्लाद का उत्तर यहाँ शान्त किन्तु क्रान्तिकारी है: समाज, परिवार तथा राष्ट्र वे बन्धन हैं जिन्हें हम स्वयं रचते हैं और जिन्हें प्रसन्न रखने में हमें अनथक परिश्रम करना पड़ता है, फिर भी वे कभी हमारे विरुद्ध हो सकते हैं; परन्तु जीव और नारायण के बीच का सम्बन्ध रचा हुआ नहीं है। भगवान् प्रत्येक आत्मा के आदि हितैषी तथा उसके मूल स्रोत हैं, अतः वह सम्बन्ध पहले से ही विद्यमान है, केवल स्मरण किए जाने की प्रतीक्षा में, रचे जाने की नहीं। इसीलिए भक्ति का एक छोटा-सा कार्य भी — चाहे बचपन में हो या वृद्धावस्था में, धन में हो या अभाव में — उन्हें प्रसन्न करने के लिए पर्याप्त है, जबकि संसार को प्रसन्न करने में बिताया सम्पूर्ण जीवन भी अन्ततः निराशा में समाप्त हो सकता है (SB 7.6.17-19)।



प्रह्लाद अपने साथियों को भगवान् नारायण की शरण लेने का आह्वान करता है, उस सबसे प्राचीन देव तथा समस्त प्राणियों की साक्षात् आत्मा की, जो उनका भी परम लक्ष्य हैं जिन्होंने सब कुछ त्याग दिया है (SB 7.6.17-19)।

सब प्राणियों में एक ही भगवान्

तत्पश्चात् प्रह्लाद ने उनकी दृष्टि समस्त वस्तुओं में व्याप्त दिव्य उपस्थिति के दर्शन की ओर उठाई। वह एक परम आत्मा, अविनाशी तथा सर्वशक्तिमान, प्रत्येक प्राणी में — ऊँचे तथा नीचे, अचल पौधों से लेकर सृष्टिकर्ता ब्रह्मा तक — और समस्त तत्त्वों तथा प्रकृति के गुणों में निवास करती है, चाहे वे किसी भी दशा में क्यों न हों (SB 7.6.20-21):

गुणेषु गुणसाम्ये च गुणव्यतिकरे तथा ।

एक एव परो ह्यात्मा भगवानीश्वरोऽव्ययः ॥ २१ ॥

guṇeṣu guṇa-sāmye ca guṇa-vyatikare tathā eka eva paro hy ātmā bhagavān īśvaro 'vyayaḥ

अर्थ: चाहे प्रकृति के गुण उभर रहे हों, सन्तुलन में हों, या परस्पर संघर्ष में हों, हर अवस्था के पीछे एक ही परम आत्मा खड़ी है — भगवान्, वह अविनाशी नियन्ता जो सबका शासन करते हैं। (SB 7.6.21)

यद्यपि वर्णन तथा परिवर्तन से परे, उन्हें भीतर द्रष्टा तथा बाहर दृश्य के रूप में पहचाना जा सकता है, और वे शुद्ध चेतना एवं आनन्द के रूप में जाने जाते हैं, जिनकी दिव्यता माया से ढकी है। अतः, प्रह्लाद ने आग्रह किया, असुर-स्वभाव को त्यागकर प्रत्येक प्राणी पर दया तथा मैत्री दिखाओ; यही भगवान् को प्रसन्न करता है।

तस्मात्सर्वेषु भूतेषु दयां कुरुत सौहृदम् ।

भावमासुरमुन्मुच्य यया तुष्यत्यधोक्षजः ॥ २४ ॥

tasmāt sarveṣu bhūteṣu dayāṁ kuruta sauḥṛdam bhāvam āsuram unmucya yayā tuṣyaty adhokṣajāḥ

अर्थ: अतः असुर-स्वभाव को त्यागकर समस्त प्राणियों के प्रति दया तथा मैत्री रखो; क्योंकि ऐसी करुणा से वह भगवान् प्रसन्न होते हैं जो इन्द्रियों की पहुँच से परे हैं। (SB 7.6.24)

जब वह अनन्त सत्ता प्रसन्न होती है, उसने जोड़ा, तो ऐसा क्या है जो प्राप्त न हो सके? जो उनके चरणों का अमृत पीते हैं तथा उनकी महिमा गाते हैं, उन्हें मुक्ति की भी लालसा करने की आवश्यकता नहीं।



प्रह्लाद सिखाता है कि एक ही परम भगवान् प्रत्येक प्राणी में — ऊँचे तथा नीचे — निवास करते हैं, और समस्त प्राणियों पर दया एवं मैत्री ही वह उपासना है जो उन्हें प्रसन्न करती है (SB 7.6.19-25)।

इस ज्ञान का स्रोत

प्रह्लाद ने अपनी शिक्षा का स्रोत बताने में सावधानी बरती। यह शुद्ध तथा अमूल्य ज्ञान, उसने कहा, बहुत पहले दिव्य ऋषि नारायण ने ऋषि नारद को दिया था, और इसे कोई भी देहधारी प्राप्त कर सकता है जो भगवान् के अनन्य भक्तों के चरणों की धूल में स्नान करे। स्वयं उसने, प्रह्लाद ने स्वीकार किया, यह साक्षात्कार तथा भक्ति का निर्मल मार्ग नारद के मुख से सुनकर पाया, जिन्होंने भगवान् को साक्षात् देखा है।

इस पर असुर-बालक चकित हो गए। वे शुक्राचार्य के दो पुत्रों के अतिरिक्त किसी गुरु को नहीं जानते थे, जिन्होंने उन्हें शैशव से पढ़ाया था; और प्रह्लाद, उन्होंने कहा, तो महल में बन्द एक शिशु था जब वह नारद जैसे महान ऋषि से मिल ही नहीं सकता था। तब उसके वचनों पर विश्वास कैसे किया जाए? उनका यह ईमानदार प्रश्न अगले अध्याय के अद्भुत उत्तर की भूमि तैयार करता है — उस कथा की जो प्रह्लाद ने अपनी माता के गर्भ में रहते हुए सुनी थी।



प्रह्लाद के उपदेश से चकित असुर-बालक पूछते हैं कि जब वह केवल एक शिशु था, तब वह ऋषि नारद से ऐसा ज्ञान कैसे पा सका (SB 7.6.29-30)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. आध्यात्मिक जीवन अभी, अपनी युवावस्था में ही आरम्भ करो। प्रह्लाद का आरम्भिक परामर्श भक्ति को वृद्धावस्था तक टालना नहीं, अपितु बचपन से ही उसका आचरण करना है, क्योंकि मनुष्य-जन्म दुर्लभ, अमूल्य तथा क्षणभंगुर है। ईश्वर की ओर मुड़ने का समय सदा वर्तमान है (SB 7.6.1)।
2. सुख तथा दुःख दोनों भाग्य से आते हैं; उनके पीछे मत भागो। चूँकि इन्द्रिय-भोग केवल देह होने मात्र से स्वयमेव आ जाता है, उसके लिए प्रयत्न करना जीवन को व्यर्थ करना है। मनुष्य का प्रयास शाश्वत कल्याण पर लगाना सर्वोत्तम है (SB 7.6.3-5)।
3. सांसारिक आसक्ति एक स्वयं-निर्मित कारागार है। अपना कोश बुनते रेशम-कीट के समान, धन, घर तथा परिवार में उलझी आत्मा स्वयं को बाँध लेती है और अपने सच्चे प्रयोजन को भूल जाती है। स्वतन्त्रता जाल को पहचानने से आरम्भ होती है (SB 7.6.9-16)।
4. नारायण की शरण लो और सबके प्रति दयालु बनो। प्रह्लाद के सन्देश का हृदय दो-भाग है: उन भगवान् की शरण जो सब प्राणियों में निवास करते हैं, और प्रत्येक प्राणी पर दया एवं मैत्री — क्योंकि यही वह उपासना है जो सचमुच उन्हें प्रसन्न करती है (SB 7.6.17-24)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

यहाँ कौन बोल रहा है, इसमें कुछ शान्त रूप से विस्मयकारी है। यह कोई संसार से थका हुआ वृद्ध नहीं जिसने सब कुछ आजमाकर उसे खोखला पाया; यह एक छोटा बालक है जिसने उन भोगों को चखा तक नहीं जिन्हें वह इतनी शान्ति से त्याग देता है। और यही तो मर्म है। प्रह्लाद संसार को निराशा से नहीं, अपितु स्पष्ट दृष्टि से त्याग रहा है — वह आरम्भ से ही देख लेता है कि हर मार्ग कहाँ ले जाता है। उसकी शिक्षा हमें उसी स्पष्टता का निमन्त्रण देती है: यह नहीं कि धन तथा भोग हमें थका दें तभी ईश्वर की ओर मुड़ें, अपितु अभी देख लें कि हमारे हाथ में जो मनुष्य-जीवन है वह दुर्लभ तथा छोटा है, और उसे उस पर लगाएँ जो नष्ट नहीं होता। और उसका अन्तिम वचन इस मार्ग को कभी ठण्डा या आत्म-केन्द्रित नहीं बनने देता: भगवान् की शरण लो, हाँ — पर उस शरण को हर प्राणी के प्रति दया तथा मैत्री बनकर छलकने दो। जो भक्ति ईश्वर को प्रसन्न करती है, वह उनके प्राणियों पर करुणा से कभी अलग नहीं होती।

एक दैनिक भाक्ते-अभ्यास

आज प्रह्लाद की शिक्षा के दोनों भागों पर एक साथ आचरण करें। पहले, कुछ मिनट अलग रखें — मानो आप एक बालक हों जो खिलौना रख रहा हो — भगवान् को पूर्ण ध्यान से स्मरण करने के लिए, भीतर दोहराते हुए: “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” फिर उस स्मरण को बाहर की ओर किसी अन्य प्राणी के प्रति दया या करुणा के एक सोचे-समझे कार्य में ले जाएँ — किसी मनुष्य, किसी पशु, किसी आवश्यकता में पड़े के प्रति — उसे उन भगवान् को मौन अर्पित करते हुए जो उनके भीतर निवास करते हैं। अपनी भक्ति तथा अपनी दया को हृदय की एक ही गति बनने दें।

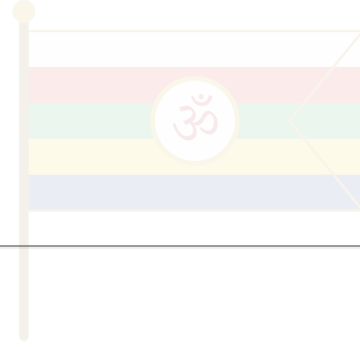
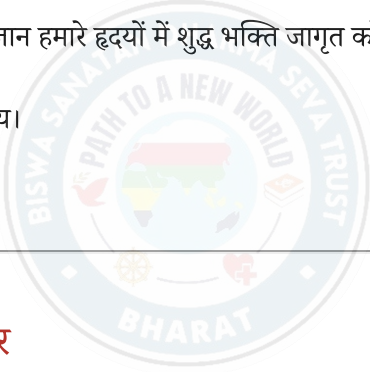
उपसंहार

प्रह्लाद का यह उपदेश अपने सहपाठियों को — और हमें भी — एक ही उज्ज्वल सत्य के साथ छोड़ता है: सच्ची स्वतन्त्रता वहीं से आरम्भ होती है जहाँ हम स्पष्ट रूप से यह देख लेते हैं कि मनुष्य-जीवन क्षणभंगुर है, और केवल नारायण की शरण, समस्त प्राणियों के प्रति करुणा के साथ जुड़कर, इसे व्यय करने योग्य है। हर अन्य खोज, चाहे वह कितनी भी मधुर प्रतीत हो, उसी रेशमी डोरी को और कस देती है। जैसे उसके चकित सहपाठी उससे पूछते हैं कि महल में बन्द एक बालक इतने रहस्य कैसे जान गया, मार्ग खुलता है अगले अध्याय के अद्भुत उत्तर की ओर — उस कथा की ओर जो प्रह्लाद ने अपने जन्म से पूर्व ही सुनी थी।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।



सन्दर्भ तथा आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, पूर्ण), सप्तम स्कन्ध, षष्ठ प्रवचन, पृष्ठ 671–675।
- श्रृंखला: Srīmad Bhagavatam Wisdom · Biswa Sanatan Dharma Seva Trust।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठावान पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश के रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी भी प्रकाशक द्वारा संबद्धता या समर्थन का कोई अभिप्राय नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-7-chapter-6-prahlada-instructs-his-schoolmates-devotion-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञानम् • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

